83

IMPACT FACTOR GIF 2.3409

ISSN-2278-3911

SHODH-PRAKALP

A Quarterly Research Journal

शोध-प्रकल्प

त्रैमासिक रिसर्च जर्नल

A Peer Reviewed Research Journal

www.shodhprakalpresearch.com

UGC Approved Journal
SHODH-PRAKALP
A Quarterly Research Journal
शोध-प्रकल्प
त्रैमासिक रिसर्च जर्नल
A Peer Reviewed Research Journal
JOURNAL NO. 63535

Volume LXXXIII

April.-June, 2018

Editor
Dr.Sudhir Sharma

Email- shodhprakalp@gmail.com

आर. एन. आई. पंजीयन क्रमांक : MPHIN/1997/2224

बीस वर्षों से नियमित प्रकाशित

IMPACT FACTOR GIF 2.3409

ISSN 2278-3911

अंक : 83 वर्ष : 25 संख्या : 2 अप्रैल-जून, 2018

SHODH-PRAKALP

A Peer Reviewed Quarterly Research Journal

शोध-प्रकल्प

त्रैमासिक रिसर्च जर्नल

(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत)

www.shodh-prakalpresearch.com

Editor
DR. SUDHIR SHARMA

संपादक
डॉ. सुधीर शर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई नगर जिला - दुर्ग (छ.ग.)

■ शोध एवं अनुसंधान विकास केंद्र, रायपुर का प्रकाशन
■ RESEARCH & RESEARCH DEVELOPMENT CENTRE, RAIPUR

■ अंतरराष्ट्रीय मानक मान्यता प्राप्त बहुप्रसारित भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में मान्य शोधपत्रिका

Volume LXXXIII Number 2 April.-June, 2018

email :shodhprakalp@gmail.com

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
(Bhailor), Mahasamund (C.G.

SHODH-PRAKALP
A Peer Reviewed Quarterly Research Journal ISSN 2278-3911

अंक : 83 वर्ष : 25 संख्या : 2 अप्रैल-जून, 2018

INDEX

1.	Patriarchal Value System in the Novel God of Small Things	Dr. Shuchita Srivastav	07
2	The Medical Termination of Pregnancy (MTP) : A legal Perspective	Dr. Manju Jha	10
3	A Clinical study of Mootrakrichchhra and its management by Yavakshar and Gokshura Kwath w.s.r. Urinary Tract Infection	Dr. Sangeeta Kaushik Dr. P. K. Baghel	13
4	Rootlessness of an expatriate: with special reference to Naipaul's Trilogy	Shashu Gupta	16
5.	बाजारवाद से जूझता भारतीय समाज और साहित्य	डॉ. प्रकाशचन्द्र सतपथी	20
6.	योग का आरोग्यवर्द्धक प्रभाव	डॉ. नीलम श्रीवास्तव	23
7.	प्रभा खेतान के उपन्यास 'छिन्नमस्ता' में नारी–जागृति के स्वर	डॉ. बृजेन्द्र पाण्डेय, तिजेश्वर प्रसाद टण्डन	26
8.	पत्रकारिता अतीत और वर्तमान	डॉ. प्रकाशचन्द्र सतपथी	29
9.	आधुनिक समय में ब्राह्मण समाज के समक्ष चुनौतियाँ और उनके समाधान	डॉ. रमेश प्रसाद द्विवेदी	33
10.	दैनिक मजदूरो की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थिति का अध्ययन	डॉ. ऋचा यादव, अमित कुमार सिंह	35
11.	ग्रामीण गर्भवती महिलाओं में स्तनपान सम्बन्धी जागरूकता का अध्ययन	डॉ. चरणजीत कौर,, पूनम गोयल	38
12.	स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजागर योजना	श्रीमती अर्चना वर्मा	42
13.	विश्व भाषा: जन भाषा कौशल	डॉ. रामनिवास साहू	45
14.	उच्च शिक्षा में अभियंता गुणवत्ता व रोजगार	डॉ. ऋचा यादव	48
15.	पं. सुन्दरलालषर्मणः छत्तीसगढ़ी पद्यकाव्येषु रसानां प्रभावः	रूपेंद्र कुमार तिवारी	50
16.	कोरिया जिला में पर्यटन	मो. सद्वदाम अन्सारी, डा. आर. आर. साहू	54
17.	माध्यमिक शाला के शहरी एवं ग्रामीण शिक्षको में पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. पदमा बोहरे, सरिता पांडे	58
18.	कोरबा जिले के अनुसूचित जनजाति भी बालिकाओं के उचित सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, विकास में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन	श्रीमती सुषमा पाण्डेय, डॉ. अब्दुल सत्तार	60
19.	शिक्षा नीति में महिलाएं	विकास कुमार विक्की	63
20.	ग्रामीण विकास में पंचायती राज की भूमिका का अध्ययन	कमलेश वर्मा	68
21.	ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन	श्रीमती उषा साहू	77
22.	जल संसाधन एवं जनजाति पोषण एवं स्वास्थ्य	डॉ. (श्रीमती) काजल मोइत्रा, श्रीमती मंजूषा साहू	79
23	किशोरावस्था की बालिकाओं में व्यक्तित्व समायोजन एवं बुद्धि से आशय	सुषमा वानखेड़े, डॉ. अब्दुल सत्तार	83
24.	हिन्दी के विभिन्न रूप	डॉ. शिबानी साहा	86

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
Bagalkot, Mahasamund (C.G

टीप : शोध-प्रकल्प में प्रकाशित शोधपत्रों और आलेखों में व्यक्त विचार या तथ्यों से संपादक /संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है उनके लिए लेखक ही उत्तरदायी हैं। शोधपत्रों में पुनरावृत्ति अथवा मौलिकता के संबंध में लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं।

IMPACT FACTOR GIF 2.3409 U.G.C. NO. 63535

www.shodh-prakalpresearch.com

शोध-प्रकल्प
त्रैमासिक रिसर्च जर्नल

ISSN 2278-3911

बाजारवाद से जूझता भारतीय समाज और साहित्य

डॉ. प्रकाशचन्द्र सतपथी
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
रामचन्डी महाविद्यालय, सरायपाली (छ.ग.)

साहित्य समाज का दर्पण है। यह इलेक्ट्रॉनिकी का युग है। आज साहित्य पुस्तक-पत्रिकाओं से निकलकर फिल्म और सीरियल के रूप में घर-घर में देखा जा रहा है। इसे इलेक्ट्रॉनिक साहित्य कहा जा सकता है। पठन-पाठन का दौर खत्म हो रहा है। दादा-दादी की कहानियाँ बच्चे अब नहीं सुनते। वे चंपक और चुनमुन भी नहीं पढ़ते। वे तो कहानियों को दूरदर्शन, इंटरनेट और मोबाइल पर देख रोमांच से भर जाते हैं। आज सम्पूर्ण साहित्य, विश्वकोष, ज्ञान-विज्ञान इंटरनेट में समाहित है। पहले पुस्तकालय एवं वाचनालय जाना, साहित्य अध्ययन करना सम्मानजनक माना जाता था। अब यह प्रचलन से बाहर हो चुका है। मनुष्य गूगल में क्लिक कर सम्पूर्ण इतिहास और ब्रह्माण्ड को खंगाल लेता है।

बाजार का उसूल है- वस्तु को बेचकर धन अर्जित करना। व्यापार में एक बड़ा तत्व होता है- ''ख्याति'', जिसे अंग्रेजी में ''गुडविल'' और महाजनी में ''पगड़ी'' कहा जाता है। जिस व्यापारी की ख्याति जितनी अधिक होती है, उसके व्यापार का प्रसार उतना ही अधिक होता है। सामाजिक जीवन में भी धन अर्जित करने के लिए ''शोहरत'' को ख्याति की तरह उपयोग किया जाने लगा है। पहले बाजार में नैतिकता होती थी, किन्तु वर्तमान में इसका अभाव दिखता है। पहले उक्ति थी- धन गया तो समझो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो समझो कुछ गया और चरित्र गया तो समझो सब कुछ चला गया। आज स्थिति इसके उलट हैं। आज धन गया तो समजा जाता है सब कुछ चला गया। अब लोग कहते हैं कि पैसा खुदा तो नहीं पर खुदा से भी कम नहीं। पैसे के ताप से बाजार ही नहीं, घर-परिवार भी झुलस जाता है। वैसे भी पैसे और पाप की राशि एक है। राशि तो पुण्य की भी एक है किन्तु पाप के प्रदूषण से पुण्य की गंगोत्री सूखने लगी है। बाजारवाद के प्रभाव से समाज में भी नैतिकता का ह्रास हो रहा है।

भारतीय समाज में बाजारवाद:-

बाजारवाद से आर्थिक विकास तेजी से होता है। सभी का लक्ष्य अधिक से अधिक धन अर्जित करना होता है। मनुष्य आत्मकेन्द्रित हो जाता है। प्रतिस्पर्धा की भावना जागृत होती है। इससे समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जो इस प्रकार है:-

1. बाजारवाद से सामाजिकता घट रही है। मनुष्य धन को अधिक महत्व देने लगा है, इसलिए नैतिक एवं चारित्रिक गिरावट आ रही है,
2. व्यक्ति आत्ममुखी हो रहा है, इसलिए संयुक्त परिवार का विघटन होने लगा है,
3. मनुष्य का अस्तित्व वस्तुगत हो गया है। भावना एवं संवेदना कम होने लगी है,
4. लागत कम करने के लिए यंत्रों का अधिक प्रयोग हो रहा है। इससे बेरोजगारी बढ़ रही है,
5. मनुष्य भौतिकवादी एवं विलासी प्रवृत्ति का होने लगा है,
6. शिक्षा, स्वास्थ्य, धार्मिक स्थलों का भी व्यवसायीकरण होने लगा है,
7. समाज में आर्थिक विषमता बढ़ रही है। फलत: सामाजिक अपराधों में वृद्धि हो रही है,
8. उद्योग-धंधे बढ़ रहे हैं। कृषि की दशा दयनीय होती जा र ह ी है,
9. बाजारवाद की तरह समाज में भी प्रतिस्पर्धा की स्थिति है, जिससे कमजोर व्यक्ति पिछड़ता चला जा रहा है,
10. धन का लोभ बढ़ने से प्राकृतिक संसाधनों का अधिक से अधिक दोहन किया जा रहा है। इससे पर्यावरण और स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है।
11. देश में वैश्वीकरण को बल मिला है, जिससे विदेशी संस्कृति का प्रभाव हमारे समाज पर पड़ रहा है।

साहित्य में बाजारवाद:-

साहित्य समाज का दर्पण है। यह इलेक्ट्रॉनिकी का युग है। आज साहित्य पुस्तक-पत्रिकाओं से निकलकर फिल्म और सीरियल के रूप में घर-घर में देखा जा रहा है। इसे इलेक्ट्रॉनिक साहित्य कहा जा सकता है। पठन-पाठन का दौर खत्म हो रहा है। दादा-दादी की कहानियाँ बच्चे अब नहीं सुनते। वे चंपक और चुनमुन भी नहीं पढ़ते। वे तो कहानियों को दूरदर्शन, इंटरनेट और मोबाइल पर देख रोमांच से भर जाते हैं। आज सम्पूर्ण साहित्य, विश्वकोष,

Received : 16 April, 2018 Reviewed 24 April, 2018 Accepted : 3 May, 2018

PRINCIPAL
Chandi College Sarai

ज्ञान-विज्ञान इंटरनेट में समाहित है। पहले पुस्तकालय एवं वाचनालय जाना, साहित्य अध्ययन करना सम्मानजनक माना जाता था। अब यह प्रचलन से बाहर हो चुका है। मनुष्य गूगल में क्लिक कर सम्पूर्ण इतिहास और ब्रह्माण्ड को खंगाल लेता है। कम्प्यूटर से वह ज्ञान-विज्ञान की हर चीज पलक झपकते पा जाता है। यह कार्य इतना आसान हो गया है कि इंसान राह चलते मोबाइल से भी गूगल सर्च कर सकता है। और तो और, स्कूल-कॉलेजों में कम्प्यूटर के माध्यम से पठन-पाठन हो रहा है।

बाजारवाद का विश्लेषणात्मक अध्ययन:-

व्यापारी बाजार से अधिकाधिक रुपया अर्जित करना चाहताहै। धन अर्जन के लिए समाज में चलचित्र और दूरदर्शन के माध्यम से अश्लीलता खूब परोसी जा रही है। समाज बिगड़े या बने, इससे उन्हें सरोकार नहीं। इस समाजघाती कार्य में अभिनेत्रियों का योगदान अभिनेताओं से कतई कम नहीं है। अफसोस कि ऐसे लोग पुरस्कार और सम्मान के पात्र भी होते हैं। अश्लीलता का दुष्परिणाम सारा देश भोग रहा है। यौन हिंसा, यौन प्रताड़ना, यौन दुराचार के अपराध अकल्पनीय रूप से प्रतिदिन हो रहे हैं। इसका शर्मनाक पहलू ये है कि अबोध और नाबालिग कन्याएँ शिकार हो रही हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड्स ब्यूरो के अनुसार 2001 से 2011 की दशाब्दि में अबोध और नाबालिग कन्याओं से हुए दुष्कर्म के राज्यवार आंकड़े झकझोरने वाले हैं, जो इस प्रकार हैं:-

क्र. सं.	राज्य	वर्ष 2001 से 2011 तक नाबालिग कन्याओं से दुष्कर्म के मामले
1.	मध्यप्रदेश	9465
2.	महाराष्ट्र	6868
3.	उत्तरप्रदेश	5949
4.	आंध्रप्रदेश	3977
5.	छत्तीसगढ़	3688
6.	दिल्ली	2909
7.	राजस्थान	2776
8.	केरल	2101
9.	तमिलनाडु	1486
10.	हरियाणा	1081

इन आंकड़ों में ऐसे मामले सम्मिलित नहीं हैं, जो लोक-लाज के भय से रिपोर्ट नहीं हो पाते। 2001 की तुलना में 2011 में इस शर्मनाक अपराध में 300 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। 16 दिसम्बर 2012 को दामिनीकाण्ड ने सभी को झकझोर दिया था। पर यह काण्ड अब रोज ही हो रहे हैं। घर-घर में दूरदर्शन के माध्यम से परोसी जा रही अश्लीलता, चौक-चौराहों पर भद्दे अश्लील पोस्टरों से ही यौन अपराध का बीजारोपण होता है। किन्तु, घोर आश्चर्य कि इस पर कहीं विरोध नहीं होता। यह इलेक्ट्रॉनिक साहित्य, जिससे समाज घुट रहा है, टूट रहा है। फिर भी लोग मौन हैं। दिल्ली सरकार ने नारा दिया है- दिलदार दिल्ली। किन्तु वस्तुस्थिति इन पंक्तियों से बयाँ होती है:

चाणक्य की बिसात पर, दमदार है ये दिल्ली
चाँदी के चमचों के लिए, दिलदार है ये दिल्ली
सुबह कन्याभोज कराते, दोपहर नारी का सम्मान करते हैं
शाम ढले दरिंदे बन, रात को कर देते हैं दागदार ये दिल्ली

ये प्रतीकात्मक पंक्तियाँ हैं। वस्तुत: दिल्ली जैसी स्थिति कमोबेश सभी राज्यों में है। बाजारवाद अत्यंत घिनौना रूप ले चुका है। सुदूर जंगलों में जहाँ निरीह आदिवासी कंद-मूल- फल खाकर जीवनयापन करते हैं, उनकी अस्मिता का सौदा सभ्य समाज से निकले हुए सौदागर करने लगे हैं। नौकरी का झांसा देकर ये भोले-भाले किशोर-युवा उम्र के लड़के-लड़कियों की तस्करी करते हैं। ये इन लड़के-लड़कियों का आर्थिक, शारीरिक, मानसिक शोषण करते हैं। उड़ीसा की कालाहाण्डी और छत्तीसगढ़ का जशपुर जिला ताजे उदाहरण हैं। यह पाश्विकता और हैवानियत की हद है। पीड़ितों के आँसू पोछने वाला प्रेमचंद आज दिखता नहीं। कोई दिखता है तो उसे कोई पढ़ता नहीं और कोई पढ़ता है तो उसके खून में हलचल नहीं होती।

महात्मा गाँधी ने कहा था कि प्रकृति हर व्यक्ति की जरूरतों को पूरा कर सकती है किन्तु, किसी के लोभ को कभी पूरा नहीं कर सकती। उनके कथन को समाज के लोभी सार्थक कर रहे हैं। उनका चश्मा, चरखा और खून से सनी घास पहले ही नीलामी हो चुकी है। अब लंदन की मुलाक्स कंपनी बापू की पूजा की माला, उनके द्वारा अपने पुत्र को दी गई पावर ऑफ अटार्नी, रामायण की किताब, चमड़े की सैण्डिल, शॉल, चादर, खाना खाने का कटोरा जैसी पचास व्यक्तिगत वस्तुओं की नीलामी कर रही है। दौलत लूटने की नीयत से व्यवसायी पश्चिमी पर्वों का देश में खूब प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। भारत में वेलेंटाईन डे, फ्रेण्डशिप डे, बर्थ डे, न्यू ईयर सेलेब्रेशन की धूम व्यवसायियों के कारण ही मचती है। इसके नाम पर वे करोड़ों-अरबों का व्यापार करते हैं। मध्यमवर्गीय युवा समाज थिरकने के लिए बेताब है। नाचने के लिए उसे बहाने चाहिए। जोश में लुट जाने का उसे कोई गम नहीं है। पश्चिमी पर्व अब तो आधुनिक भारतीय सभ्यता के अंग बन चुके हैं।

इंडिया खूब चमक रहा है, भारतवर्ष का पता ही नहीं चलता
न्यू ईयर खूब दमक रहा है, हिन्दी नववर्ष का पता नहीं चलता
भारत माँ! तेरा कफ़न कोई और नहीं, तेरे बेटे-बेटियाँ बुन रहे हैं
वेलेंटाईन-डे खूब गमक रहा है, मदर्स-डे का पता ही नहीं चलता

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
Dist.Mahasamund (C.G.

तोले मासे की तरह राजनीति में पैंतरेबाजी चलती है। व्यापार का उसूल है- कम में खरीद कर ज्यादा में बेचना। मांग की अपेक्षा पूर्ति अधिक होने पर सामग्री का मूल्य कम निर्धारित होता है। इसके विपरीत मांग की अपेक्षा पूर्ति कम होने पर सामग्री का मूल्य अधिक होता है। यह अर्थशास्त्र का नियम है। इसी नियम पर राजनीतिक पार्टियाँ भी योजनाएं बनाते हैं। कई राज्यों में गरीबी रेखा के नीचे के परिवारों के लिए नाममात्र मूल्य पर गेहूँ, चावल, चना, नमक, इत्यादि बाँटने जैसी योजनाएँ चल रही हैं। किन्तु यह परीक्षण का विषय है कि क्या ऐसी सामग्री व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त है? कहीं स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव तो नहीं पड़ रहा? यह कौन सुनिश्चित करेगा?

दैनिक पत्रिका समूह के संपादक गुलाब कोठारी ने 6 मई 2013 के अंक में लिखते हैं कि ''पंजाब और हरियाणा में 2001 में उन्नत कृषि के लिए क्रमशः 7005 टन और 5025 टन कीटनाशक दवाओं का प्रयोग किया गया था। दोनों ही प्रदेश आज भयंकर कैंसर की चपेट में हैं। बठिण्डा से बीकानेर आने वाली एक दैनिक ट्रेन का नाम ही ''कैंसर ट्रेन'' है। प्रतिदिन 600 रोगी इलाज के लिए आते हैं। माटी के कण-कण में कैंसर व्याप्त है।'' उन्नत खेती केलुभावन में किसान परम्परागत जैविक खेती से दूर हो रहे हैं। पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के भूगोल विभाग के दो शोधकर्ताओं आनंद मोहन और तृप्ति राजपूत ने पाया कि नया राज्य बनने के बाद छत्तीसगढ़ में खेती जमीन का रकबा 33 प्रतिशत घटा है। व्यापारियों को चावल में कंकड़, दाल में मिट्टी, हल्दी-मिर्च में रंग, दूध में रसायन मिलाने से गुरेज नहीं है। सब्जी-फलों को इंजेक्शन ठूंसकर बड़ा करते हैं या पकाते हैं। नतीजतन, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी में हुए शोध में माँ के दूध में पेस्टीसाइड्स, एंडोसल्फान और मैलिथियोन जैसे हानिकारक तत्व पाए गए हैं। हम कैसे भारत का निर्माण कर रहे हैं?

व्यापारी केवल अपने व्यापार की सोचता है, बाजार की नहीं। आज समाज में भी यही स्थिति है। हर व्यक्ति आत्म-केन्द्रित है। देश और समाज की तो छोड़िए, लोग अपने पड़ोसी तक की नहीं सोचते। घपले-घोटालों का जोर, भ्रष्टाचार का बोलबाला, खेलों में फिक्सिंग बाजारवाद से ही पोषित है। वैश्वीकरण के जल और उदारवाद के उर्वरक से बाजारवाद का बेल खूब पनप रहा है। फलतः भौतिकता एवं विलासिता का उत्थान हो रहा है तथा मानवता एवं राष्ट्रवाद का पतन हो रहा है। उद्योगों का विकास और कृषि का ह्रास तीव्रतम है। यह संतुलित विकास नहीं है। बाजारवाद का दुष्परिणाम है कि मनुष्य मशीन की तरह काम कर रहा है और मनुष्य मशीन की तरह।

कबीरदास जी कह गए हैं, साईं इतना दीजिए, जामे कुटुम्ब समाए, मैं भी भूखा न रहूँ, और न भूखा जाए। किन्तु देश में अमीर अरबपति होते जा रहे हैं और गरीब कंगाल। समाज में इससे विद्रूपताएँ बढ़ रही हैं। बस्तर की समस्या इसके दुष्परिणाम का एक ज्वलंत उदाहरण है। जंगल कट रहा है। पर्यावरण भिखारी के चिथड़ों जैसा हो रहा है। आज बोतल में पानी बिक रहा है। यदि स्थिति यही रही तो समय ऐसा भी आएगा जब आदमी भूख मिटाने की गोलियाँ और पीने का पानी दवाई की दुकानों से खरीदेगा। अब तक बहुत नुकसान हो चुका है। आगे चिंतन-मनन करने एवं नीतिकारों को दिशा दिखाने का दायित्व समाजशास्त्रियों, दर्शनशास्त्रियों, साहित्यकारों, पत्रकारों, बुद्धिजीवों, विचारकों और राष्ट्रवादियों के हिस्से में ही आता है।

बाजारवाद का समाधानः-

जैसा कि विश्लेषण किया जा चुका है बाजारवाद का समाज पर कई नकारात्मक प्रभाव पड़ रहे हैं। यद्यपि, बाजारवाद को रोक पाना कठिन लगता है, तथापि इसके नियंत्रण के लिए निम्नलिखित कदम सुझाए जाते हैं:

1. व्यावसायिक शिक्षा के साथ नैतिक शिक्षा को प्रोत्साहन देना चाहिए,
2. हमारे देश में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति है। इसे तत्काल स्थिर करना चाहिए,
3. धन अर्जन एवं संचय करने की सीमा निर्धारित होनी चाहिए तथा दन का समान वितरण होना चाहिए,
4. राजनीतिक शुद्धिकरण एवं चुनाव सुधार आवश्यक है,
5. राष्ट्रवाद की गंगा ऊपर से बहनी चाहिए,
6. अनैतिकता एवं अश्लीलता पर पूर्ण प्रतिबंध होना चाहिए,
7. उद्योगों के लिए लक्ष्मण रेखा निर्धारित करना चाहिए तथा कृषि एवं कृषकों को प्रोत्साहन मिलना चाहिए और
8. विशेष बात यह कि उत्पाद को बाजार में लाने से पहले समाज पर उसके दीर्घकालिक प्रभाव का अध्ययन एवं आकलन होना चाहिए।

■■

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
(Jagaijor), Mahasamund (C.G.